अर्चना त्यागी

पापा की टोपी

काव्या ने कोचिंग से बाहर आकर मां को फोन मिलाया। शमिता कुछ पूछने के लिए पास आई लेकिन थोड़ी दूर हटकर काव्या ने फोन को कान से लगा लिया। घंटी जा रही थी लेकिन उधर से कोई जवाब नहीं था। शमिता पास ही खड़ी थी। उससे रहा नहीं गया तो पूछ ही लिया।

"किस बात से परेशान है तू ? इतनी देर से किसे फोन मिला रही है?" काव्या काफी परेशान दिख रही थी।

" कुछ नहीं। मां का फोन था। कभी आता नहीं है, कोचिंग के समय। आज़ अचानक क्यों किया पता नहीं।

अभी फोन लग ही नहीं रहा है।"

" अब तो घर ही चल रहे हैं ना। क्यों परेशान हो रही है ? आंटी से घर जाकर बात कर लेना। चल निकलते हैं बस।" शमिता ने हाथ पकड़कर काव्या से बाहर की और चलने का आग्रह किया।

घर पर ताला लगा था।

लगभग एक घंटे बाद मां के फोन से वापिस कॉल आया ।उधर से छोटी बहन दिव्या बोल रही थी।

" दी, हम लोग दादी के घर आए हैं। पापा की तबीयत ठीक नहीं है। आईसीयू में हैं। आपका फोन नहीं लगा इसलिए मां और मैं, हम दोनों ही कार करके चले आए।"

" मैं बस से आ रही हूं। तुम मां का ध्यान रखना तब तक।" कहकर काव्या ने फोन काट दिया। सामने वाली आंटी तब तक आ गई थी और उन्होंने घर का ताला भी खोल दिया था।

" बेटा थोड़ा पानी पी लो। चाय भी बना देती हूं। तुम्हारी मम्मी को अचानक जाना पड़ा। घबराना मत हम लोग हैं यहां पर।" आंटी चाय बनाने अपने घर चली गई। काव्या को आंटी का व्यवहार थोड़ा अजीब लगा। इतना ध्यान तो उन्होंने कभी नहीं रखा था।

चाय पीकर काव्या बस स्टैंड जाने के लिए निकल गई। फिर से उसे आश्चर्य हुआ जब आंटी ने अपने बेटे को स्कूटर लेकर उसे छोड़ने के लिए भेजा।

" बेटा ऊपर वाले ने दिया नहीं और पति को कुछ समझा नहीं। अब अकेली पड़ी है जवान लड़कियों को लेकर।" ये शब्द काव्या के मस्तिष्क में प्रतिध्वनि कर रहे थे।

बस रुकी तो दिव्या खड़ी नज़र आई। काव्या को लेने ही आई थी। " दी हम लोग सुरेश चाचा के घर पर हैं। दादी ने घर में नहीं जाने दिया। पापा अब नहीं हैं।" दिव्या बात पूरी नहीं कर पाई और काव्या से लिपटकर ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

रिश्तेदारों और मुहल्ले वालों के दबाव में पिता के दाह संस्कार में दोनों बेटियों और उनकी मां को शामिल कर लिया गया लेकिन काव्या समझ गई थी कि अब सब ख़त्म हो चुका है। बेटा पैदा नहीं कर पाने के कारण घरवालों के दबाव में उसके पिता ने दोनों बेटियों को उनकी मां के साथ दो साल पहले घर से निकाल दिया था। खुद भी खुश नहीं थे इसलिए बेइंतहा शराब पीने लगे थे। दोनों बेटियां पढ़ाई में अच्छी थी इसलिए मां उन्हे लेकर दूसरे शहर में आ गई थी।

काव्या को बचपन के वो पापा बहुत याद आते थे जो अपनी सर्विस की टोपी उसके सिर पर रखकर गर्व से कहते थे " बेटा नहीं हुआ तो क्या मेरी होनहार बेटी मेरा नाम रोशन करेगी।" इसी सोच को प्रबल रखते हुए उसने स्नातक की पढ़ाई के बाद प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए कोचिंग संस्थान में दाखिला ले लिया था।

पापा की टोपी काव्या ने अपने पास ही रख ली। उनके साथ नहीं जाने दी। दादी, बुआ, चाची और दूसरी महिला रिश्तेदारों ने न तो उन तीनों से बात की और ना ही उनका दुःख बांटने की कोशिश ही की। घर की सभी चीजों पर चाचा चाची अपना हक जता रहे थे। चाचा कोई काम नहीं करते थे इसलिए दादी को फुसलाकर घर अपने नाम करवा लिया था।

" भाई के पास तो सरकारी नौकरी है और आगे कोई वारिस भी नहीं है। लड़कियां तो शादी करके पराई हो जाएंगी। उन्हे यहां कुछ नहीं मिलेगा।"

चाचा का दो टूक जवाब था जिस पर दादी ने अपनी मोहर लगा दी थी। इतने लोगों में कोई भी उन तीनों के बारे में नहीं सोच रहा था। आखिरी रस्म के दिन पापा के स्टाफ के लोग भी आए।

" भाई साहब सरकारी नौकरी में थे और कानून के अनुसार उनकी नौकरी अब उनकी बड़ी बेटी काव्या

को मिल जायेगी।" सबने मिलकर यह बात सामने रखी। चेहरे उतरे हुए थे। फुसफुसाहट जारी थी।

" जब लड़कियों को उसकी मां ने उससे अलग कर दिया था तो अब नौकरी पर कैसा हक है ?"

स्टाफ के लोग वकील को भी साथ लेकर आए थे।

" कानून के अनुसार उनकी नौकरी उनकी बेटी को ही मिलेगी भले ही वह पास रह रही हो या दूर। और कोई भी इस दायरे में नहीं आता है।"

काव्या अपनी मां और दिव्या के साथ वापिस लौट आई। मन में दो सवाल बार बार उठ रहे थे।

" पापा की शराब की लत के कारण मां को उन्होंने घर से निकाला फिर भी मां ही दोषी क्यों है ?

लड़कियों को आज़ भी संतान का दर्जा क्यों नहीं दिया जाता है ?

उनकी परवरिश ज़िम्मेदारी की श्रेणी में क्यों नहीं आती है ?"

मां अभी सदमे से बाहर नहीं आई थी। काव्या ने कोचिंग छोड़कर पापा की टोपी पहन ली थी। सब कुछ बदल गया था। उसका आसमान अब जमीन पर आ गया था। हां पापा बचपन की तरह रोज़ ही कहते थे।

" बेटी है तो क्या ? मेरा अभिमान है। " बस सामने नहीं आते थे। सवालों से कतराते थे लेकिन अपनी टोपी रोज़ काव्या को पहनाते थे।